IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, February 2026
Impact Factor: 8.2

—fÙkokl jkek;.k esa Hkxoku Jhjke

vfHkftr ljdkj

शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग,

बी. जी. आर. परिसर पौड़ी

हेमवती नन्दन बहुगुणा, गढ़वाल विश्वविद्यालय,

श्रीनगर गढ़वाल, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, उत्तराखण्ड

sarkarabhijit416@gmail.com

lkjka'k&

पन्द्रहवीं शताब्दी के बङ्गाली कवि कृत्तिवास ओझा द्वारा बङ्गाली भाषा में रचित रामायण को **—fÙkokl jkek;.k** या **Jhjke ik¥pkyh** के नाम से जाना जाता है। कृत्तिवास रामायण की मुख्य विशेषता यह है कि इसकी रचना **i;kj NUnk** में गीत स्वरूप की गई है और यह मूल संस्कृत रामायण का शाब्दिक अनुवाद नहीं है। कवि कृत्तिवास ने इस रचना में अनेक–रामायणों में उपलब्ध कथावस्तु को स्थान दिया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने बङ्गाली सामाजिक रीति–रिवाजों और सामाजिक जीवन के तत्त्वों को प्रस्तुत करके रामायण की कहानी को बङ्गाली संस्कृति से युक्त कर दिया, जो मूल वाल्मीकि रामायण से कई विषयों में पृथक् हैं। महर्षि वाल्मीकि के मूल रामायण में रामचन्द्र के द्वारा की गई दुर्गा पूजा का उल्लेख नहीं है, और न ही यह किसी अन्य रामायण में दिखाई देता है। लेकिन कवि कृत्तिवास ओझा ने अपनी रामायण में उल्लेख किया है। वह तत्कालीन बङ्गाली समाज के आलोक में रामायण के चरित्रों की भी व्याख्या करते हैं, जो वाल्मीकि रामायण में वर्णित कुछ पात्रों के चरित्र-चित्रण से भिन्न है। श्रीराम का चरित्र भी उन में से एक है।

l³dr 'kCn– कृत्तिवास रामायण, रामायण, भगवान् श्रीराम।

DOI: 10.48175/IJARSCT-31176